संपादकीय

यह प्रकृति का चमत्कार ही है कि शक्ल-सूरत, रंग-रूप की भिन्नता की तरह ही हर व्यक्ति की मानसिक बुनावट भी अलग-अलग होती है। उसकी दृष्टि, संवेदना, सोच उसका भाव-जगत, राग-द्वेष, दुख-सुख और उसके जिंदगी के सरोकार उसे कहीं न कहीं से भिन्न बनाते हैं , जिसके चलते किसी न किसी मोड़ पर वह अपने को एक द्वीप की तरह एकाकी पाता है। इसके साथ यह भी सच है कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है तो उसमें अपने को दूसरों से जोड़ने, दूसरों के साथ मिल-बांटने की सहज प्रवृत्ति होती है। यहीं से संप्रेषण का संकट पैदा होता है जो किसी अनुभूति और संवेदना की सघनता के चलते स्वयं को किसी न किसी रूप में व्यक्त करने की छटपटाहट का रूप ले लेता है। उसी छटपटाहट में ही विभिन्न कलाओं और साहित्य का बीज-बिंदु होता है। कला और साहित्य ही वह सेतु है जो हमें एक-दूसरे के साथ जोड़ता है और संप्रेषण को सार्थक ढंग से संभव बनाते हुए इतिहास, सभ्यता और संस्कृति की परतें भी खोलता है। जिससे विरस, एकाकी, अनगढ़ और विरूप जिंदगी में समरसता, सहधर्मिता, अन्वति और सौंदर्य ले आता है। मनुष्य ने अपने प्रयास से सभ्यता और संस्कृति का जो विशाल ताना-बाना बनाया है यदि साहित्य उसका आधार स्तंभ है तो हमारी लोक और जनजातीय कलाएं उसका आईना हैं। इतिहास गवाह है कि हमारी लोक और जनजातीय कलाओं की यात्रा सभ्यता की चिरंतन खोज की यात्रा है। कलाकार जो समय के बीहड़ विस्तार में बैठकर, अंतस में झांक कर उसके भीतर के अंधेरे से अनुभूतियों को प्राप्त कर उसे रंग और रेखाओं से कभी पत्थर, कभी लकड़ी, कभी भित्तियों पर उकेरता रहा और मनुष्य के सतत संघर्ष का गवाह बना। यह कल्पना-प्रसूत होते हुए भी समय के सत्य को उद्भासित करने, मनुष्य की चेतना का विस्तार और परिष्कार करने में मददगार साबित होता रहा। लोक और जनजातीय कलाएं ही जताती हैं कि यथार्थ, मनुष्य से भी प्राचीन है और हमारी बदलती सभ्यताएं इतिहास और वर्तमान के बीच का संवाद होती हैं।

साक्षात्कार

जनजातीय संस्कृति को तोड़-मरोड़ कर न प्रस्तुत करें

न्यूटन फिल्म से ख्यातिप्राप्त सिनेअभिनेता, लोक कलाकार, गायक, कोरियाग्राफर, गीतकार **खिरेन्द्र यादव** से **मधु तिवारी** की बातचीत

प्र. सबसे पहले मैं यह जानना चाहूंगी कि आपका रुझान फिल्मों की ओर कैसे हुआ?

उ. बचपन से ही गीत-संगीत रेडियो पर सुना करता था साथ ही नाटक देखने-सुनने का भी शौक मुझे काफी रहा। प्राथमिक स्तर पर पढ़ाई के साथ रेडियो स्टेशन में गीत गाया करता था। स्कूली जीवन में ही युवामानस मंडली से जुड़कर नाटकों का मंचन करता रहा मिडिल स्कूल तक मैंने नाटक मंचन ईप्टा संस्था से जुड़कर शुरू कर दिया था। हाईस्कूल तक मैंने बस्तर बैलाडीला नारंग, आगरा, पटना में लगातार नाटकों का मंचन किया। और यह यात्रा आज भी अनवरत जारी है।

है। और किन-किन क्षेत्रों में रुचि है आपकी?

उ. बचपन से ही मैं खेल से भी जुड़ा रहा मैराथन दौड़ में मुझे सम्मान मिला। पैदल 12 घंटे में 65 किलो मीटर की दूरी तय करने का रिकार्ड बनाया। फुटबॉल प्लेयर के रूप में यहां श्रेष्ठ खिलाड़ी का सम्मान प्राप्त हुआ था। इसके साथ गीत लिखना, गाना, बांसुरी बजाना व जगह-जगह घूमना मेरा शौक रहा है। बॉलीवुड कलाकारों की आवाज की मिमिकीरी मंचो पर हमेशा करता रहा जिसमें अमिताभ बच्चन, मिथुन चक्रवती, राजकुमार, संजीवकुमार, अमजद खान

मधु तिवारी	**खिरेन्द्र यादव**
संयुक्त संपादक 'ककसाड़' **मो.** 097131-25160	जन्म - 8 मई 1969 पिता - स्व. रूपधर यादव माता - स्व. लक्ष्मी यादव निवासी - कोण्डागांव

की भूमिका निभायेंगे। मेरी खुशी का ठिकाना ही न रहा। लेकिन यहां से मुंबई वापस जाने के बाद छः माह तक न कोई फोन, न कोई खबर और न ही